Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

कक्षा 12 अनिवार्य हिंदी टेस्ट-5 (सूरदास) आदर्श उत्तर कुंजी पूर्णांक 20

प्रश्न 1. "नीति काव्य के क्षेत्र में रहीम का स्थान सर्वोपरि है।" इस कथन के विषय में अपने विचार लिखिए।

उत्तर: रहीम बचपन से ही साहित्य प्रेमी एवं प्रतिभाशाली थे। यह सामंजस्यवादी एवं उदार स्वभाव के थे। उन्होंने अपने जीवन के विस्तृत और गहन अनुभवों को सरल सुबोध भाषा में मार्मिकता से व्यक्त किया है। रहीम के काव्य में व्यवहार कुशलता, परोपकार, सज्जनता, स्वाभिमान, परदुखःकातरता, सत्संगति लोक व्यवहार आदि को लेकर सुंदर शिक्षा दी गई है , अतः नीति काव्य में रहीम का स्थान सर्वोपरि उल्लेखनीय है।

प्रश्न 2. रहीम का साहित्यिक परिचय दीजिये

उत्तर. 'रहीम' नाम से हिन्दी काव्य जगत में प्रसिद्ध , नीतिपरक दोहों के अप्रतिम रचयिता का पूरा नाम , अब्दुर्रहीम खानखाना था। इनका जन्म सन् 1556 ई. में हुआ था। इनके पिता बैरम खाँ अकबर के संरक्षक थे। रहीम कई भाषाओं के ज्ञाता , विद्वान और उदार हृदये, पुरुष थे। बादशाह अकबर से इन्हें पूरा सम्मान मिला। रहीम उदार धार्मिक दृष्टिकोण के अनुकरणीय उदाहरण थे। आपने हिन्दू देवताओं के प्रति पूर्ण आदर प्रकट किया। आपका देहावसान सन् 1626 ई. में हुआ। रहीम लोकप्रिय कवि रहे हैं। उनके नीतिपरक दोहों का प्रयोग प्राय: लोग करते रहे हैं। उन्होंने नीति, भक्ति, श्रृंगार तथा प्रेम आदि विषयों पर काव्य रचनाएँ की हैं। आपने महाभारत, रामायण, पुराणों तथा गीता आदि ग्रन्थों के पात्रों तथा घटनाओं का अपनी रचनाओं में उदारता से प्रयोग किया है। रहीम के प्रिय छन्द, दोहा, सोरठा, बरवै तथा सवैया आदि हैं।

रचनाएँ- रहीम की प्रमुख रचनाएँ-दोहावली , बरवै नायिका भेद , रासपंचाध्यायी, मदनाष्टक तथा नगरशोभा आदि हैं।

प्रश्न 3.संकलित दोहों के आधार पर कवि रहीम की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर: कवि रहीम की कविता अपने विशिष्ट गुणों के कारण सदा ही लोकप्रिय रही है। संकलित दोहों में अधिकांश नीतिपरक कथनों पर केन्द्रित है। इनके आधार पर कवि रहीम की काव्यगत विशेषताएँ, संक्षेप में इस प्रकार हैं

भाषा- कवि रहीम ने अपने दोहों की रचना सरस , साहित्यिक और प्रौढ़ ब्रजभाषा में की है। गूढ़ विषयों को भी सरल भाषा में प्रस्तुत करने में रहीम को कुशलता प्राप्त है। भाषा में तद्भव , तत्सम तथा आंचलिक शब्दों का सहज मेल है।

कथन शैली- कवि ने अपनी बात को प्रभावशाली बनाने के लिए अनेक शैलियों को माध्यम बनाया है

विषय को गहराई और प्रामाणिकता देने के लिए रहीम प्रायः दृष्टांतों और उदाहरणों का प्रयोग करते हैं। व्यंग्य, परिहास और उपदेश सभी का प्रयोग वे प्रभावशाली ढंग से करते हैं।

अलंकार- कवि ने अलंकारों का प्रयोग स्वाभाविक रूप से किया है। अनुप्रास, उपमा, रूपक तथा दृष्टांत आदि अलंकार उनके काव्य की शोभा बढ़ाते हैं।

छन्द- दोहा कवि रहीम का सिद्ध छंद है। इस छोटे से छंद में कवि ने गूढ़ विचारों, अनुभवों और शिक्षाओं को भरने में पूर्ण सफलता पाई है।

विषय- कवि ने नीति, लोक व्यवहार, उपदेश, मानवीय मनोभाव तथा हास-परिहास आदि विविध विषयों को अपनी सहज कुशलता से लघु छंद में पिरोया है। कवि रहीम की कविता सभी दृष्टियों से लोकप्रियता में आगे रही है।

प्रश्न 4. सप्रसंग व्याख्या कीजिए (कोई दो)

(क) कदली, सीप, भुजंग-मुख, स्वाति एक गुनं तीन।
जैसी संगति बैठिए, तै सोई फल दीन॥

सन्दर्भ तथा प्रसंग- प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक में संकलित है नीति के दोहे पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता कवि रहीमदास हैं। इन दोहे में कवि ने संगति के प्रभाव पर व्यंग्यमय टिप्पणी की है।

व्याख्या- प्रस्तुत दोहे में कवि ने संगति के प्रभाव को बताया है कि व्यक्ति जैसी संगति में रहता है वैसा ही उस पर प्रभाव होता है। जिस तरह से स्वाति नक्षत्र के जल की एक बूंद अलग-अलग स्थानों पर गिरने से अलग-अलग परिणाम होते हैं। स्वाति नक्षत्र के जल की बूंद केले पर गिरती है तो कपूर बन जाती है, सीपी में गिरने से मोती बन जाती है और सर्प के मुख में गिरने से वह विष बन जाती है। ठीक उसी प्रकार मनुष्य जैसी संगत में रहेगा वैसा ही उसका स्वभाव हो जाएगा।

विशेष-

(i) जीवन में संगति के प्रभाव को कवि ने बड़े प्रभावशाली ढंग से समझाया है। कवि का सन्देश है कि सदा सत्संगति ही करनी चाहिए

(ii) भाषा साहित्यिक और लक्षणा शक्ति सम्पन्न है।

(iii) शैली व्यंग्यात्मक तथा नीति की व्यावहारिक शिक्षा देने वाली है।

(iv) दृष्टान्त अलंकार का सुन्दर प्रयोग है।

(ख) दोनों रहिमन एक से, जौ लौं बोलत नाहिं।
जोन परत हैं काक पिक, ऋतु बसन्त के माँहिं॥

सन्दर्भ तथा प्रसंग- प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक में संकलित है नीति के दोहे पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता कवि रहीमदास हैं। वह कहता है कि जब तक बोलते नहीं, तब तक गुणयुक्त और गुणहीन व्यक्ति की पहचान नहीं हो पाती है।

व्याख्या- रहीम कहते हैं कि कौआ और कोयल जब तक बोलते नहीं हैं, तब तक वे एक जैसे प्रतीत होते हैं। जब बसन्त ऋतु आने पर कोयल कूकती है और कौआ काँव-काँव करता है तो तुरन्त ज्ञात हो जाता है कि इनमें से कौआ (गुणहीन) कौन है और कोयल (गुणवान) कौन है।

विशेष

(i) गुणवान जैसा रंग-रूप बना लेने से कोई गुणवान नहीं हो जाता। उसकी वाणी उसकी वास्तविकता प्रकट कर देती है। गुणी व्यक्ति की वाणी स्वाभाविक रूप से मधुर और शिष्ट होती है और पाखण्डी व्यक्ति की वाणी बनावटी और निम्न स्तर की हुआ करती है।

वाणी के स्तर से व्यक्ति की सही पहचान हो जाती है।

(ii) कवि ने दीन-हीन और दुर्बलों की सहायता करने का तथा गुणी बनने का सन्देश दिया है।

(iii) सरल भाषा में कवि ने प्रशंसनीय जीवन मूल्यों की ओर ध्यान आकर्षित किया है।

(iv) शैली भावात्मक तथा प्रतीकात्मक है।

(ग) माँगे घटत रहीम पद, कितौ करौ बढ़ि काम।
तीन पैग बसुधा करो, तऊ बावनै नाम॥

सन्दर्भ तथा प्रसंग- प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक में संकलित है नीति के दोहे पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता कवि रहीमदास हैं। इस दोहे में कवि कह रहा है कि माँगने जाने वाले मनुष्य की प्रतिष्ठा अवश्य ही कम हो जाती है। चाहे वह कितना भी बड़ा काम क्यों न कर दिखाए।

व्याख्या- कवि कह रहा है कि मनुष्य चाहे कितना बड़ा या आश्चर्यजनक काम क्यों ने कर दिखाए किन्तु माँगने , हाथ फैलाने पर उसका पद और प्रतिष्ठा अवश्य ही कम हो जाती है। स्वयं भगवान भी जब बलि से दान लेने गए तो उन्होंने भी तीन डग में सारी पृथ्वी नाप डाली , परन्तु इतना महान कार्य करने पर भी उनका नाम 'वामन' (बौना) ही रहा।

विशेष-

(i) भगवान देवताओं के हित के लिए दैत्यराज बलि से वामन (बौने) का रूप बनाकर तीन डग धरती माँगने गए थे। जब बलि ने उन्हें देना स्वीकार कर लिया तो उन्होंने विराट रूप धारण करके तीनों लोक तीन डगों से नाप डाले। इतना आश्चर्यजनक कार्य करने (परम विराट रूप धारण करने) पर भी उन्हें वामनावतार ही कहा जाता है। कवि ने संदेश दिया है कि मनुष्य को कभी किसी के सामने हाथ नहीं फैलाना चाहिए।

(ii) भाषा पर कवि का पूर्ण अधिकार है। कथन शैली रोचक और प्रभावशाली है।

(iii) दोहों में अनुप्रास तथा दृष्टांत अलंकार हैं।

इस प्रश्न-पत्र की
आदर्श उत्तर-कुंजी आप
03:00 बजे बाद इस लिंक
https://tinyurl.com/y66j6z98
से डाउनलोड कर सकते हैं।

कक्षा 12 (अनिवार्य हिन्दी - सृजन) परीक्षा की दृष्टि से सरल व आसान व्याख्या एवं हल प्रश्न उत्तर सहित Free PDF Download इस से कीजिए-
https://tinyurl.com/y6tpcbsp

Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg